कमलेश भारतीय

चाय-पानी

"सर!"

"कहो, क्या बात है?"

"सर, वो अधिकारी हरिजन छात्रवृत्ति पास करने के प्रति-छात्र पैसे माँग रहा है!"

"कोई जरूरत नहीं इसकी।"

"फिर बिल पास नहीं होगा, सर!"

"न हो। बोलो—जो आब्जेक्शन लगाना हो लगा दो!"

वह मेरा संदेश लेकर ऑफिस के अंदर चला गया ! कुछ पल बाद वापस आया ।

"सर, वे कहते हैं कि चलो, प्रति-छात्र न सही, लेकिन एक अच्छी चाय-पानी लायक पैसे तो दे दो !"

"बोलो—जल्द प्रबंध करके बताते हैं !"

वह संदेश दे आया, तब मैंने उसे अपनी बाइक के पीछे बिठाया और जान-पहचान वाले मित्र अधिकारी के पास पहुँच गया ! अधिकारी ने स्वागत किया और चाय-पानी पूछा तो मैंने कहा—"चाय-पानी तो पीयेंगे लेकिन पहले अपने राजस्व अधिकारी को भी बुला लीजिये।"

"क्यों?"

"क्योंकि उन्होंने मुझसे चाय-पानी की फरमाइश की है । सोचा, जब आप, पिलायेंगे तब उन्हें भी पिला दूँगा ! मेरे पास इतने पैसे कहाँ कि हरिजन छात्रों के पैसे काटकर अधिकारी को चाय पिला सकूँ?"

वे मित्र अधिकारी बहुत हँसे और सारा माजरा समझ गये। तुरन्त उस राजस्व अधिकारी को फोन कर बुला लिया ! वह मुझे तो पहचानता नहीं था लेकिन क्लर्क को देखकर कुछ चौंका!

"हाँ भई, ये प्रिंसिपल महोदय चाय-पानी पिलाने मेरे पास आ गये हैं ! बोलो, चाय मँगवा लूँ?"

राजस्व अधिकारी हाथ जोड़कर खड़ा हो गया—"नहीं सर! बिना चाय के ही ठीक है!" "फिर इनको ऑफिस जाकर चाय पानी पिलाओ और इनके बिल पास कर दे दो।" उस अधिकारी को काटो तो खून नहीं! सिर झुकाये बाहर निकल गये!

कमलेश भारतीय

मोमबत्तियाँ

"माँ, ये मोमबत्तियाँ जलाकर क्यों चल रहे हैं अंकल लोग?"

"बेटा, ये कुछ अक्ल के अंधों को रोशनी दिखाने निकले हैं!"

"मम्मी, मोमबत्तियाँ पिघलने लगेंगीं तो गर्म मोम उंगलियों पर गिरेगा। उससे किसी का क्या बिगड़ा? अपना ही हाथ जलेगा !"

"बात तो ठीक है तेरी । फिर तेरी नज़र में क्या करना चाहिए ?"

"मैं तो कहती हूँ कि ये मोमबत्तियाँ लेकर उस पापी को जलाओ, जिसने यह गंदा काम किया है !"

माँ अपनी नन्ही-सी बेटी का मुँह देखती रह गयी !!

कुर्सी

प्रेस क्लब ने मुख्यमंत्री को आमंत्रित किया । पुलिस तैनात हो गयी और आम जनता का रास्ता बंद कर दिया गया । क्या सिविल, क्या पुलिस के अधिकारी ! सब अधिकारी आते रहे, मुआयना करते रहे । आखिर सीआईडी विभाग के उच्चाधिकारी ने कहा—"जिस कुर्सी पर मुख्यमंत्री को बैठना है, वह कुर्सी ठीक नहीं । इसे तुरंत बदलो ।"

यह हमारे उच्चाधिकारियों का आदेश था। हम वहाँ सारी तैयारियाँ कर चुके थे । अब कुर्सी में क्या खोट निकल आया? हमने मज़ाक-मज़ाक में पूछा—"फिर यह भी बता दीजिये कि कौन-सी कुर्सी लायें? तीन महीने वाली या पांच साल चलने वाली?"

अधिकारी हमारा मुह देखते रह गये!!